bihar board 8th class sanskrit notes | मंगलम्

मंगलम्
(उपसर्ग , अयादि संधि [भारत की प्राचीन..... कामना की गई है।]

संगच्छध्वं..... उपासते ।।
अर्थ – शिष्यो ! तुम सब साथ चलो , साथ बोलो , तुम सब समान रूप से मन में चिन्तन करो । जैसे प्राचीन काल में देवता लोग अपने हिस्से (भाग) का ही हविष्यान्न को ग्रहण करते थे उसी प्रकार तुम सब भी मिल – जुलकर भोग्य वस्तु का उपभोग करो ।
सह नाववतु सह ..... विद्विषावहै ।

अर्थ – भगवान हम दोनों (गुरु – शिष्य) को एक साथ (समान रूप से) रक्षा करें । हम दोनों एक साथ (समान रूप से) किसी चीज का उपभोग करें । हमदोनों समान रूप से पराक्रम (परिश्रम) करें । अध्ययनकृत ज्ञान से हम दोनों में तेजस्विता का गुण आवे । हम दोनों परस्पर (एक – दूसरों से) विद्वेष न करें ।
शब्दार्थ –

संगच्छध्वम् = तुमलोग साथ चलो । संवदध्वम् = तुम सब साथ बोलो । वो (वः) = तुम्हारे । मनांसि = मन (बहुवचन) । संजानताम् = एक साथ चिन्तन करें । देवाः = श्रेष्ठ पुरुष । पूर्वे = प्राचीन काल के । भागम् = अपने प्राप्य अंश को । सञ्जानानाः = समान चित्त वाले । सह = साथ । नौ = हमदोनों । उपासते = समीप रहते हैं , ग्रहण करते हैं । भुनक्तु = भोजन करे , भोगे । अधीतम् = ज्ञान , पढ़ा हुआ विषय । मा = नहीं । विद्विषावहै = (हमदोनों) विद्वेष करें । नाववतु (नौ + अवतु) = हमदोनों की रक्षा करें ।
व्याकरणम्

सन्धि – विच्छेदः –

नाववतु = नौ + अवतु । नावधीतमस्तु = नौ + अधीतम् + अस्तु ।

https://www.evidyarthi.in/